# SKILL ENHANCEMENT COURSE

# (SEC)

# DEPARTMENT OF SANSKRIT

**DRAFT**

**SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC)**
Department of Sanskrit
Kumaun University, Nainital

**SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC) PREPARED FOR THE POOL OF COURSE**

| Semster | Paper Title in multi study –Sanskrit | Theory/ Practical/Practice | Credits |
|---|---|---|---|
| I | नित्यनैमित्तिक अनुष्ठान | Theory/ Practical | **2** |
| II | संस्कृत संगणक | Theory/ Practice | **2** |
| III | ज्योतिषशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्त | Theory | **2** |
| IV | संस्कृत छन्द एवं संगीत | Theory/ Practice | **2** |
| V | रंगमंच के सिद्धान्त | Theory/ Practice | **2** |
| VI | भारतीय वास्तुशास्त्र | Theory/ Practial | **2** |

## Department of Sanskrit

## SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC)

**No. of Hours-30**

### CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISTES OF THE COURSE

| Course Title | Credits | Credit distribution 0f the course | | | Eligibility criteria | Pre-requisite of the course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| SEC- नित्यनैमित्तिक अनुष्ठान | 2 | 1 | 0 | 1 | Pass in XII | Nil |

**अध्ययन का उद्देश्य**

1. विद्यार्थी को भारतीय पारम्परिक कर्मकाण्ड एवं सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित कराना।
2. नित्य नैमित्तिक अनुष्ठान विधि को जानकर जीवन को नियमबद्ध एवं आचरणशील बनाना।
3. भारतीय कर्मकाण्ड के प्रामाणिक शास्त्रीय रूप से परिचित कराना।
4. सामान्य अनुष्ठान सम्पन्न कराने योग्य कुशल और पौरोहित्य कर्म विशारद् बनाना।
5. आत्मनिर्भर एवं उन्नतभारत की संकल्पना को साकार करने में सक्षम बनाना।

**अध्ययन की उपलब्धि**

1. विद्यार्थी भारतीय पारम्परिक कर्मकाण्ड एवं सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित होंगे।
2. नित्यनैमित्तिक अनुष्ठान से स्वयं और समाज को सुसंयत बनाने में समर्थ होगें।
3. भारतीय कर्मकाण्ड के प्रामाणिक शास्त्रीयरूप से परिचित होकर उसकी व्यावहारिक उपयोगिता को समझ सकेंगे।
4. पौरोहित्यकर्म विशारद् बनेंगे।
5. उन्नतभारत की संकल्पना को साकार करने में सक्षम एवं आत्मनिर्भर बनेंगे।

| Unit | Topic |
|---|---|
| Unit I | नित्यनैमित्तिक अनुष्ठान परिचय, पञ्चोपचार पूजन (प्रातरुत्थान, स्नान, संध्या, तर्पण तथा पञ्चयज्ञ), पञ्चोपचार से सम्बन्धित मन्त्रों अथवा श्लोकों का अध्ययन एवं अभ्यास। |
| Unit II | नवग्रह शान्ति, प्राग्जन्म तथा जातकर्म संस्कार, अन्नप्राशन तथा चौलकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह संस्कार, गृहारम्भ एवं गृहप्रवेश आदि से सम्बन्धित मन्त्रों अथवा श्लोकों का अध्ययन एवं अभ्यास। |

**Suggested Rading:**


1. हिन्दू संस्कार, राजबली पांडे चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1995।
2. धर्मशास्त्र का इतिहास, प्रथम भाग, अर्जुन चौबे, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ।

3. संस्कार प्रकाश, भवानी शंकर त्रिवेदी, लाल बहादुर शास्त्री केंद्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली।
4. पौरोहित्यकर्म प्रशिक्षक, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
5. नित्यकर्म पूजा प्रकाश, गीता प्रेस गोरखपुर।
6. धर्मशास्त्र का इतिहास, पांडुरंग वामन काणे, (अनु0) अर्जुन चौबे कश्यप, प्रथम भाग, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ, 1973।

Note :

Examination: Subject to University' directions

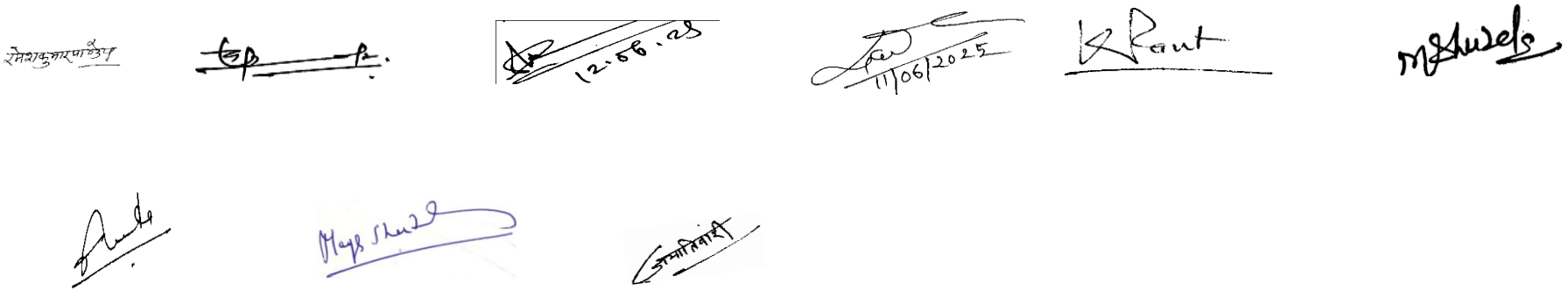

## Department of Sanskrit

# SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC)

**No. of Hours-30**

### CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISTES OF THE COURSE

| Course Title | Credits | Credit distribution 0f the course | | | Eligibility criteria | Pre-requisite of the course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| **SEC- संस्कृत सङ्गणक** | 2 | 1 | 0 | 1 | Pass in XII | Nil |

**अध्ययन का उद्देश्य**

1. विद्यार्थी को सङ्गणक का सामान्य ज्ञान प्राप्तकर, अधिगम क्षमता में वृद्धि कराना।
2. E- Content एवं डिजिटल लाइब्रेरी का उपयोग करने में समर्थ बनाना।
3. संस्कृत भाषा और साहित्य के नित्य–नवीन अन्वेषण को खोज पाने तथा उससे स्व–ज्ञान कोष में वृद्धि कराना।
4. सङ्गणक के प्रयोग के माध्यम से संस्कृतज्ञान के प्रचार प्रसार करने में कुशल बनाना।
5. पारम्परिक एवं वैश्विक ज्ञान में सामञ्जस्य बनाकर ज्ञान की अभिवृद्धि करने एवं जीविकोपार्जन के नए मार्ग खोजने का कौशल विकसित करना।

**अध्ययन की उपलब्धि**

1. विद्यार्थी सङ्गणक का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर, अधिगम क्षमता में वृद्धि हेतु इसका उपयोग करनेमें सक्षम होंगे।
2. E- Content एवं डिजिटल लाइब्रेरी का उपयोग करने में समर्थ होंगे।
3. संस्कृत भाषा और साहित्य के नित्य–नवीन अन्वेषण को खोज तथा उससे स्व–ज्ञान कोष में वृद्धि के योग्य होंगे।
4. सङ्गणक के प्रयोग के माध्यम से संस्कृत ज्ञान के प्रचार प्रसार करने में कुशल बनेंगे।
5. पारम्परिक एवं वैश्विक ज्ञान में सामञ्जस्य बनाकर ज्ञान की अभिवृद्धि करने एवं जीविकोपार्जन के नए मार्ग खोजने का कौशल विकसित होगा।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | सङ्गणक का सामान्य परिचय, संस्कृत की दृष्टि से सङ्गणक की उपयोगिता, विभिन्न उपकरण(सॉफ्टवेयर)–माइक्रोसॉफ्ट वर्ड, माइक्रोसॉफ्ट पावरप्वाइंट, सङ्गणक में संस्कृत–हिन्दी लेखन हेतु उपयोगी उपकरण (टूल्स)–गूगल इनपुट टूल, गूगल असिस्टेंट एवं वॉइस टाइपिंग। |
| **Unit II** | अन्तर्जाल (इंटरनेट) का प्रयोग एवं वेब सर्च– ई बुक्स, ई रिसर्च जनरल, ई मैग्जीन।<br>संचार माध्यम से (ऑनलाइन)शिक्षण–प्रशिक्षणका आधार (टीचिंग लर्निंग प्लेटफॉर्म) –जूम, मीटएवं शोध आधार–(रिसर्च प्लेटफार्म)–स्वयं, मूक, ई–पाठशाला, शोधगङ्गा, गूगल स्कॉलर आदि। |

**Suggested Reading:**


1. कम्प्यूटर का परिचय, गौरव अग्रवाल, शिवा प्रकाशन, इंदौर।
2. कम्प्यूटर फंडामेंटल, पी0के0 सिन्हा, बी0पी0बी0 पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
3. इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी, सुमिता अरोरा, धनपत राय पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
4. कम्प्यूटर : सामान्य परिचय – डॉ0 शोभा भारद्वाज– युवराज पब्लिकेशन्स, आगरा।
5. कम्प्यूटर : मौलिक सिद्धान्त– डॉ0 शोभा भारद्वाज– युवराज पब्लिकेशन्स, आगरा।


Note :

Examination: Subject to University' directions

## Department of Sanskrit

## SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC)

**No. of Hours-30**

### CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISTES OF THE COURSE

| Course Title | Credits | Credit distribution 0f the course | | | Eligibility criteria | Pre-requisite of the course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Theory | | |
| SEC- ज्योतिशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्त | 2 | 1 | 0 | 1 | Pass in XII | Nil |

**अध्ययन का उद्देश्य**

1. भारतीय प्राचीन ज्ञान के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना।
2. भारतीय ज्योतिषशास्त्र का सामान्य ज्ञान प्राप्त कराना
3. ज्योतिष के विभिन्न सिद्धान्तों के माध्यम से विश्लेषण क्षमता जाग्रत करना।
4. पंचागं अवलोकन एवं निर्माण कौशल को विकसित करना।

**अध्ययन की उपलब्धि**

1. भारतीय प्राचीन ज्ञान के प्रति अभिरूचि उत्पन्न होगी।
2. भारतीय ज्योतिषशास्त्र का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. ज्योतिष के विभिन्न सिद्धान्तों के माध्यम से विश्लेषण क्षमता जाग्रत होगी।
4. पंचागं अवलोकन एवं निर्माण कौशल का विकास होगा।

| Unit | Topic |
|---|---|
| Unit I | ज्योतिषशास्त्र का सामान्य परिचय, उद्भव एवं विकास– ज्योतिषशास्त्र का महत्त्व, ज्योतिषशास्त्र परम्परा एवं विकास।<br>ज्योतिष चन्द्रिका–कृतिकार का परिचय, ज्योतिषचन्द्रिका का महत्त्व। |
| Unit II | ज्योतिष चंद्रिका–प्रतिपाद्यविषय–कालादि की परिभाषा, दिनों के प्रकार,दिनों के नाम,मासों के प्रकार, नाक्षत्र एवं सावन मास, मासों के नाम,अधिकमास (मलमास) का लक्षण, तिथियों के नाम, योगों के नाम, नक्षत्रों के नाम, राशि की परिभाषा एवं नाम आदि। |

**Suggested Reading:**


1.ज्योतिष चंद्रिका, रेवती रमण शर्मा, (संपा) कान्ता भाटिया, भारतीय बुक कॉरपोरेशन, दिल्ली।
2. ज्योतिर्विज्ञानसन्दर्भसमालोचनिया, प्रो0 बृजेशकुमार शुक्ल, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली।
3. बृहत् संहिता, अच्युतानन्दझा (अनु0), चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

4. बृहत् संहिता, राधाकृष्णन भट्ट (अनु0), मोतीलाल बनारसीदास वॉल्यूम 1 और 2, दिल्ली।
5. भारतीय ज्योतिष, शंकर बालकृष्ण दीक्षित शिवनाथ झारखंडी (अनु0), हिन्दी समिति, उत्तर प्रदेश।
6. भारतीय ज्योतिष परिचय, सर्वनारायण झा, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, शास्त्री, नई दिल्ली।
7. ब्रह्माड एवं सौर परिवार, त्रिपाठी देवी प्रसाद, दिल्ली।
8. भुवन कोश, त्रिपाठी देवी प्रसाद, दिल्ली।
9. ज्योतिष के आधारभूतत्त्व एवं ज्योतिषचन्द्रिका–सम्पादक व्याख्या0 गिरीश चन्द्र पन्त, इन्दु प्रकाशन, दिल्ली।
10. ज्योतिषरुद्रप्रदीपः– पण्डितरुद्रदेवजोशी कृत– सम्पादक एवं व्याख्याकार प्रो0 जगन्नाथ जोशी–मुद्रक–कपिल कॉम्पलैक्स, मुखानी, हल्द्वानी।

Note :
Examination: Subject to University' directions

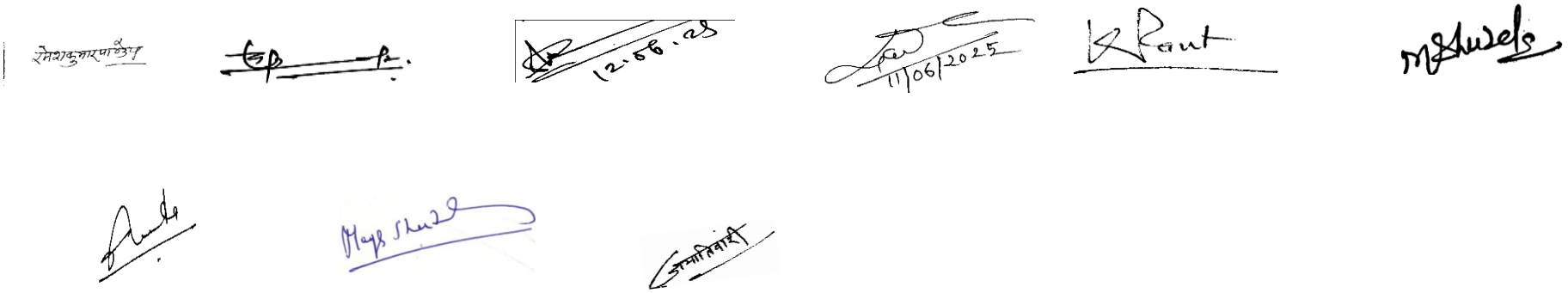

## Department of Sanskrit

## SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC)

**No. of Hours-30**

### CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISTES OF THE COURSE

| Course Title | Credits | Credit distribution 0f the course | | | Eligibility criteria | Pre-requisite of the course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| **SEC- संस्कृत छन्द एवं संगीत** | 2 | 1 | 0 | 1 | Pass in XII | Nil |

**अध्ययन का उद्देश्य**

1. छन्द शब्द से परिचय कराना।
2. आचार्य पिगंल के जीवनवृत्त, कर्तृत्व एवं जन्मस्थान से परिचित कराना।
3. छनदःशास्त्र ग्रन्थ की विषयवस्तु से परिचित कराना।
4. छनदःसूत्र की प्रमुख टीकाओं तथा भाष्यों से परिचित कराना।
5. छन्द एवं संगीत का सामन्जस्य बोध कराना।

**अध्ययन की उपलब्धि**

1. छन्दशास्त्र के ज्ञान की आवयश्कता से परिचित हो सकेगें।
2. वैदिकमन्त्रों के उच्चारण के लिये छन्द की अनिवार्यता से परिचित हो सकेगें।
3. लौकिकछन्दों से परिचित होकर साहित्य में उनकी उपादेयता का बोध करेगें।
4.छन्द में प्रयुक्तशब्दावली से परिचित होगें।
5. छन्द एवं संगीत के सम्बन्ध से परिचित होकर साहित्य को गतिशीलता प्रदान होगी।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | छन्दशास्त्र का परिचय, आचार्य पिगंल का परिचय, छन्द एवं संगीत का परस्पर सम्बन्ध,छन्दों का महत्त्व तथा वर्णादि विचार, लघु–गुरु विचार एवं वैदिक–लौकिक छन्दों की उपयोगिता। |
| **Unit II** | प्रमुख वैदिक छन्दों की परिभाषा, उदाहरण एवं गान पद्धति– गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप् एवं जगती।<br>प्रमुख लौकिक छन्दों की परिभाषा, उदाहरण एवं गान पद्धति– अनुष्टुप्, आर्या, वंशस्थ, भुजंगप्रयात, सृग्विणी, वंसन्ततिलका, हरिगीतिका, मालिनीय, शिखरिणी एवं मन्दाक्रान्ता। |

**Suggested Reading:**

1.वृत्तरत्नाकरः– केदारभट्ट–संपादक धरानन्द शास्त्री, मोती लाल बनारसी दास दिल्ली।
2. छन्दोमञ्जरी– जगन्नाथ शास्त्री तैलङ्ग, भारतीय विद्या प्रकाशन वाराणसी।
3. सुवृत्तलिक– डॉ0 ब्रजमोहन, चौखम्बा संस्कृत सीरिज ऑफिस, वाराणसी।
4. श्रुतबोध– श्री कनकलाल ठक्कुर एवं ब्रह्मशंकर मिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

Note :

Examination: Subject to University' directions

## Department of Sanskrit

## SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC)

**No. of Hours-30**

### CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISTES OF THE COURSE

| Course Title | Credits | Credit distribution 0f the course | | | Eligibility criteria | Pre-requisite of the course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| SEC- रंगमञ्च के सिद्धान्त | 2 | 1 | 0 | 1 | Pass in XII | Nil |

**अध्ययन का उद्देश्य**

1.विद्यार्थियों को रंगमंच से परिचित कराना।
2. रंगमंच के सिद्धान्तों से परिचित कराना।
3. रंगमंच के प्रयोग में निपुणता प्राप्त कराना।

**अध्ययन की उपलब्धि**

1. विद्यार्थियों रंगमंच के सिद्धान्तों से परिचित होकर अभिनय कला में निपुणता प्राप्त करेगें।
2. अभिनय की निपुणता से चलचित्र निर्माण में कौशल प्राप्त करेगें।
3. रंगमंच की कुशलता से उन्नत भारत अभियान में सहयोग करेगें।

| Unit | Topic |
|---|---|
| Unit I | नाट्यशास्त्र का परिचय एवं प्रतिपाद्य विषय। रंगमंच के प्रकार एवं निर्माण विधि।<br>अभिनय के प्रकार– आङ्गिक, वाचिक, आहार्य एवं सात्त्विक। |
| Unit II | वस्तु (कथावस्तु/इतिवृत्त)<br>नेता (नायक, नायिका आदि)। रस परिचय। एक नाटक का मंचन– मृच्छकटिकम्। |

**Suggested Reading:**


1– संक्षिप्त नाट्यशास्त्र– राधावल्लभ त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली–2008।
2– भारतीय नाट्य, स्वरूप एवं परम्परा– राधावल्लभ त्रिपाठी, संस्कृत परिषद्, सागर मध्य प्रदेश–1988।
3– नाट्यशास्त्र की भारतीय परम्परा एवं दशरूपक– हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
4– नाटक और रंगमंच– डॉ0 सीताराम झा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।
5–नाट्यशास्त्र– भरतमुनि (1–4 भाग) सम्पादक बाबूराम शुक्ल शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
6–भारतीय नाट्यशास्त्र की परम्परा और विश्व रंगमंच– राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली।
7–संस्कृत नाट्य मीमांसा– केशवराव मुसलगांवकर, परिमल प्रकाशन, दिल्ली।

Note :

Examination: Subject to University' directions

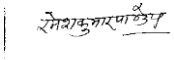

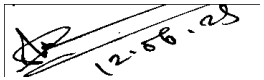


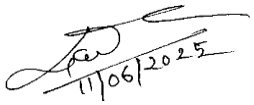


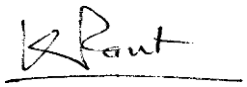

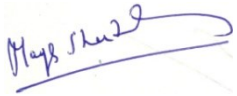

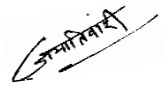

## Department of Sanskrit

## SKILL ENHANCEMENT COURSE (SEC)

**No. of Hours-30**

### CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISTES OF THE COURSE

| Course Title | Credits | Credit distribution 0f the course | | | Eligibility criteria | Pre-requisite of the course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| **SEC- भारतीय वास्तुशास्त्र** | 2 | 1 | 0 | 1 | Pass in XII | Nil |

**अध्ययन का उद्देश्य**

1. भारतीय वास्तुकला का सामान्य परिचय प्राप्त करना।
2. भारतीय प्राचीन ज्ञान धरोहर को जानने समझने की जिज्ञासा उत्पन्न करना।
3. वास्तुकला के महत्त्व एवं वर्तमान उपयोगिता से परिचित कराना।
4. वास्तुशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्तों के ज्ञान द्वारा उनमें अनुप्रयोग का कौशल विकसित करना।

**अध्ययन की उपलब्धि**

1. भारतीय वास्तुकला का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगें।
2. भारतीय प्राचीन ज्ञान धरोहर को जानने समझने की जिज्ञासा उत्पन्न होगी।
3. वास्तुकला के महत्त्व एवं वर्तमान उपयोगिता से परिचित होंगे।
4. वास्तुशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्तों के ज्ञान द्वारा उनमें अनुप्रयोग का कौशल विकसित होगा।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | भारतीय वास्तुशास्त्र परिचय, प्रासङ्गिकता तथा टोडरमल्ल का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व, टोडरमल्ल विरचित वास्तुसौख्यम् प्रथम भाग– 1–13 एवं भूमि परीक्षण, दिक्साधन। निवास–द्वितीय भाग– 14–22 हेतु स्थान चयन। |
| **Unit II** | वास्तुसौख्यम् भाग 3– शुभाशुभ, वृक्षनिरुपण–31–49, शल्यशोधन 74–82। वास्तुसौख्यम् भाग 4– 83–102 एवं 107–112, षड्वर्गपरिशोधन, वास्तुचक्र, गृहवास्तु। शिलान्यास भाग–6, गृहनिरुपण–171–194। प्रयोगात्मक कार्य–फील्ड वर्क। |

**Suggested Reading:**


1. वास्तुसौख्यम्–टोडरमल्ल– कमलाकान्त शुक्ल शिक्षण शोध प्रकाशन संस्थान वाराणसी 1996।
2. भारतीय वास्तुशास्त्र–सुखदेव चतुर्वेदी –श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली।
3. वास्तुप्रबोधिनि–विनोदशास्त्री, सीताराम शर्मा –मोती लाल बनारसी दास दिल्ली।

4. वृहद्वास्तु माला–राम मनोहर द्विवेदी, ब्रह्मानन्द त्रिपाठी चौखम्बा– सुरभारती प्रकाशन वाराणसी 2012।
5. वास्तुसार–देवी प्रसाद तिपाठी, ईस्टर बुक लिकर्स दिल्ली 2015।
6. भारतीय वास्तुशास्त्र का इतिहास–डॉ0 विद्याधर, ईस्टर्न बुक लिकर्स, नई दिल्ली।
7. वास्तुपूजापद्धतिप्रकाश–संकलन कर्ता श्रीस्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती प्रकाशक– श्री सत्य साधना कुटीरसमिति,ऋषिकेश।

Note :

Examination: Subject to University' directions

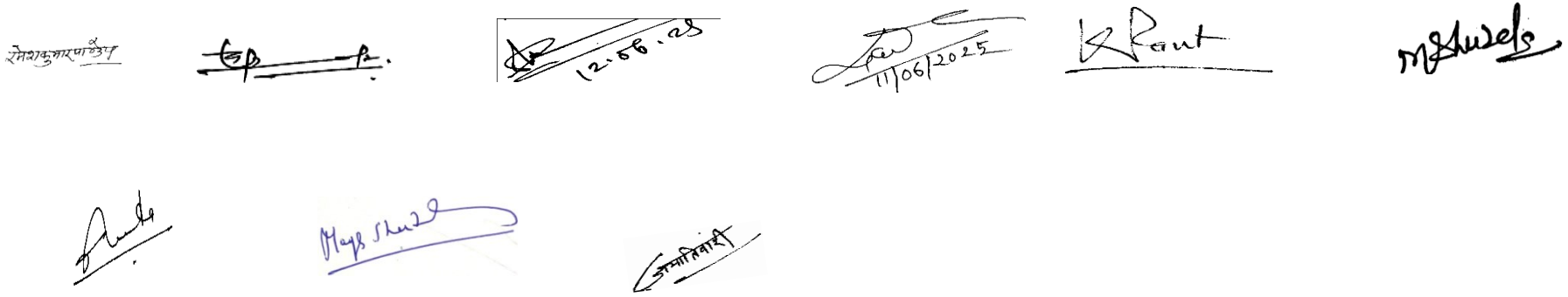

---0---